॥ ब्रह्मसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकम् - २ / प्रपाठकः - ८ / अनुवाकः - ८ / पञ्चादयः - ६६–६९)

ब्रह्म॑ ज॒ज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता᳚त्। वि सी॑म॒तः सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः। स बु॒ध्निया॑ उप॒ मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः॥६६॥

स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ विवः॑। पि॒ता वि॒राजा॑मृष॒भो र॑यी॒णाम्। अ॒न्तरि॑क्षं वि॒श्वरू॑प॒ आवि॑वेश। तम॒र्कैर॒भ्य॑र्चन्ति व॒त्सम्। ब्रह्म॒ सन्तं॒ ब्रह्म॑णा व॒र्धय॑न्तः। ब्रह्म॑ दे॒वान॑जनयत्। ब्रह्म॒ विश्व॑मि॒दं जग॑त्। ब्रह्म॑णः क्ष॒त्रं निर्मि॑तम्। ब्रह्म॑ ब्राह्म॒ण आ॒त्मना᳚। अ॒न्तर॑स्मिन्नि॒मे लो॒काः॥६७॥

अ॒न्तर्विश्व॑मि॒दं जग॑त्। ब्रह्मै॒व भू॒ताना॒ं ज्येष्ठ᳚म्। तेन॒ को॑ऽर्हति॒ स्पर्धि॑तुम्। ब्रह्म॑न्दे॒वास्त्रय॑स्त्रि॒ꣳशत्। ब्रह्म॑न्निन्द्रप्रजाप॒ती। ब्रह्म॑न् ह॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑। ना॒वीवा॒न्तः स॒माहि॑ता। चत॑स्र॒ आशाः॒ प्रच॑रन्त्व॒ग्नयः॑। इ॒मं नो॑ य॒ज्ञं न॑यतु प्रजा॒नन्। घृ॒तं पिन्व॑न्न॒जरꣳ॑ सु॒वीर᳚म्॥६८॥

ब्रह्म॑ स॒मिद्भ॑व॒त्याहु॑तीनाम्।

generated on **April 9, 2024**

Downloaded from

http://stotrasamhita.github.io | StotraSamhita | Credits